बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
द्वारा प्रशिक्षित एवं पोषित पशुपालकों की

# सफलता की कहानियाँ

2023

## Success Stories

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
द्वारा प्रशिक्षित एवं पोषित पशुपालकों की

# सफलता की कहानियाँ

# Success Stories

बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय
पटना-800014, बिहार

# सफलता की कहानियाँ

प्रथम संस्करण : अगस्त, 2023

संरक्षक :

**डॉ. रामेश्वर सिंह**
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बिहार, पटना

मार्गदर्शक :

**डॉ. वीर सिंह**
अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर, शिक्षा

**डॉ. विशेष कुमार सक्सेना**
निदेशक शोध

**डॉ. संजीव कुमार**
कुलसचिव

**डॉ. ए.के. ठाकुर**
निदेशक प्रसार

मुख्य संपादक :

**डॉ. जे.के. प्रसाद**
अधिष्ठाता
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, बिहार, पटना

संपादक :

**डॉ. पंकज कुमार,** विभागाध्यक्ष
प्रसार शिक्षा

**डॉ. सरोज कुमार रजक,** सह-प्राध्यापक

**डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार सिंह,** सहायक प्राध्यापक

**डॉ. कौशल कुमार,** सह-प्राध्यापक

© स्वत्वाधिकार
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बिहार, पटना

ISBN:

मुद्रक : दीक्षा आर्ट एण्ड प्रिन्टस्, पटना
मो॰- 9431436534, Email: dikshaart2013@gmail.com

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रस्तावित भवन

# एफ0पी0ओ0 संचालक बन 150 महिलाओं को स्वावलम्बी बनाया

**नाम :– श्री दुर्गेश कुमार**
**उम्र :– 40 वर्ष**
**पता :– ग्राम– अंजनाकोट, मोतीपुर, मुजफ्फरपुर, बिहार**
**व्यवसाय :– पशुपालन एवं पशु उत्पाद प्रसंस्करण**

वर्ष 2015 में स्नातक पास श्री दुर्गेश कुमार ने पशुपालन को अपना व्यवसाय बनाने का निर्णय लिया। आत्मा मुजफ्फरपुर के सहयोग से आपने बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना में व्यवसायिक पशुपालन तकनिक विषय पर वर्ष 2016 में प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं को संगठीत एवं पशुपालन के लिए प्रेरित करने का कार्य शुरू किया। आपने नाबार्ड के सहयोग से स्वयं सहायता समूह का गठन किया तथा ग्रामीण महिलाओं को बकरी पालन, मुर्गीपालन एवं सुकर पालन हेतु न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि उनके उत्पादों के लिए बाजार उपलब्धता में भी सहयोग किया। श्री कुमार के कार्य भावना को देखते हुए उन्हें से मोतीपुर का प्रखण्ड आत्मा अध्यक्ष भी बनाया गया है।

श्री कुमार ने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना द्वारा संचालित ICAR-NASF परियोजना से जुड़कर वर्ष 2022 में NABARD के सहयोग से सर्वोदय उत्पादक संगठन (PFO) का गठन किया जिसमें लगभग 100 महिलाएं सब्जी उत्पादन एवं ग्रामिण मुर्गीपालन कर उनसे प्राप्त अंडों का विभिन्न उत्पाद यथा मुर्गी के अंडे का अचार, बटेर के अंडे का आचार, अंडो का पैकेजिंग एवं मार्केटिंग आदि कर अच्छी आय प्राप्त कर रही है। समुह के सदस्य बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना से प्रशिक्षण प्राप्त कर मुर्गियों की उन्नत प्रजातियां यथा वनराजा, ग्रामप्रिया, कड़कनाथ एवं बटेर का पालन एवं व्यवसाय कर आमदनी प्राप्त कर रहे हैं।

FPO के सदस्यों का मुर्गा एवं बटेर (नर) थोक भाव में निकट के होटल एवं ढ़ाबों में आसानी से बिक जाता है, जिससे प्रति मुर्गा (औसत वजन 4 किलो) 800 से 900 रूपये की शुद्व आमदनी प्राप्त होती है तथा अंडो का उत्पाद 400 रूपये प्रति किलो की दर से कृषि विज्ञान केन्द्र पिपराकोठी एवं आत्मा के माध्यम से बिकता है। बटेर को 60 से 70 रूपये प्रति पीस बेचकर प्रति बटेर 25–30 रूपये की शुद्व आमदनी प्राप्त करते हैं। श्री कुमार भविष्य में मांस एवं उसके उत्पाद के प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग तथा एक्सपोर्ट के क्षेत्र में कार्य करना चाहते हैं। इनके पशुपालन आधारित ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए वर्ष 2023 में विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है।

# बकरी पालन को राज्य में उद्यम के रूप में किया स्थापित

**नाम :– श्री विपिन झा**
**उम्र :– 48 वर्ष**
**पता :– ग्राम छतना, परसा बाजार, पटना**
**व्यवसाय :– बकरी पालन**

लगभग 15 वर्ष पूर्व बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना से प्रशिक्षण एवं प्रेरणा लेकर बकरी पालन का व्यवसाय शुरू करने वाले श्री विपिन झा आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है। मात्र 10–12 बकरीयों से शुरू किये फार्म में आज 300 बकरीयॉ हैं, इतना ही नहीं श्री झा आज राज्य के सबसे बड़े बकरी पालन के क्षेत्र में सलाहकार भी हैं। ये सालाना लगभग 20–25 लाख की बकरीयों की सप्लाई विभिन्न संस्थानों को करते हैं। इनके फार्म के बकरीयों की गुणवत्ता एवं इनकी कार्यबद्वता के कारण राज्य ही नहीं अपितु दुसरे राज्यों के किसान भी बकरीयाँ इन्हीं से खरीदना पसंद करते हैं। आप उ॰प्र॰ एवं राजस्थान के सुदूर जिलों से उन्नत नश्ल के बकरीयों को मंगाकर किसानों की मॉग को पूरा करते हैं। विश्वविद्यालय से प्रेरणा लेकर आप बकरीपालन को बढ़ावा देने हेतु अपने प्रक्षेत्र पर निःशुल्क चार दिवसीय प्रशिक्षण भी आयोजित करवाते हैं जिसमें विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी सहयोग दिया जाता है। आप अब तक 450 युवाओं का प्रशिक्षण करवा चुके हैं। प्रशिक्षणोपरान्त प्रक्षेत्र स्थापना में उनका मार्गदर्शन भी करते हैं। आपकी कार्यशैली एवं बकरीपालन में उद्यमिता विकास को देखते हुए वर्ष 2017 में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना द्वारा आपको सम्मानित भी किया जा चुका है।

विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन में आपके द्वारा 10 एकड़ की भूमि में समेकित पशुपालन का मॉडल लगभग 30 लाख रूपये की लागत से तैयार किया गया है, जिसमें मछलीपालन मुर्गीपालन, बकरीपालन, बत्तखपालन के साथ–साथ टिश्शु कल्चर, केला, पपीता एवं नींबू की खेती कर लगभग 20 लाख रूपये की वार्षिक आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान में आपके प्रक्षेत्र में लगभग 300 बकरीया, 400 रंगीन मुर्गीयॉ, 100 बत्तख एवं 5 एकड़ के दो तालाब है।

# पशुपालन आधारित इको टूरिज्मः एक अभिनव प्रयास

**नाम :– ई0 दीपक कुमार**
**उम्र :– 50 वर्ष**
**पता :– कराई ग्राम, नौबतपुर, पटना**
**व्यवसाय :– इको टूरिज्म**

पेशे से इंजिनियर श्री दीपक कुमार की सोच ने पशुपालन को एक नया आयाम दिया है। पटना से करीब 20 कि0मी0 की दूरी पर नौबतपुर के निकट कराई ग्राम में पशुपालन आधारित इको टूरिज्म की स्थापना उनके नवाचारी सोच का प्रतिफल है। श्री कुमार कोरोना संकम्रण काल में वर्ष 2019–20 में खाली समय में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के वैज्ञानिकों के संपर्क में आये और पशुपालन आधारित इको टूरिज्म व्यवसाय की वृहद चर्चा की। किसी ऐसे अनछुए क्षेत्र में कार्य करने के जज्बे के साथ लगभग आपने 50 लाख रूपये की लागत से 12 एकड़ जमीन पर इस पर्यटन केन्द्र की स्थापना की। इस केन्द्र में विभिन्न प्रकार के पक्षी, पशु, तालाब एवं पेड़–पौधे हैं। प्राचीन आश्रम की तरह दिखने वाला यह केन्द्र पटना एवं अन्य शहरों के लोगों के लिए एक कौतुहल का विषय बनता जा रहा है। यहॉ पर लोग अपने परिवार एवं मित्रों के साथ आकर शुद्व, ताजा एवं जैविक वातावरण में भोजन एवं सैर–सपाटे का आनंद लेते हैं।

यहॉ के रसोई घर में आप स्वयं भी यहीं के ताजा उत्पाद को बनाकर खा सकते हैं। यहॉ बोटिंग के साथ–साथ मछली पकड़ने की पारंपरिक विधि का आनंद भी उठाया जा सकता है। श्री कुमार बताते हैं कि यहॉ प्राकृतिक संरक्षण के साथ–साथ ग्रामीण युवाओं को रोजगारपूरक प्रशिक्षण भी मामूली लागत पर दिया जाता है। इस केन्द्र की लोकप्रियता बढ़ रही है। इन्हें विश्वविद्यालय द्वारा नवाचारी पशु उद्यमी के लिए वर्ष 2023 में पुरस्कृत भी किया जा चुका है।

# मरीन इंजिनियरिंग की नौकरी छोड़ संतोष बने डेयरी व्यवसायी

| | | |
|---|---|---|
| नाम | :– | संतोष कुमार |
| उम्र | :– | 30 वर्ष |
| शिक्षा | :– | बी0 टेक (Marine) |
| पता | :– | बेन, नालंदा, बिहार |
| व्यवसाय | :– | डयरी फार्मिंग |

वर्ष 2015 में मेरिन इंजिनियरिंग से स्नातक श्री संतोष कुमार लगभग चार वर्षों तक जहाज पर नौकरी की। अच्छा वेतन मिलने के बावजूद गाय पालन के प्रति उनका सहज प्रेम भाव में उन्हें नौकरी छोड़कर गाय पालन एवं दुग्ध व्यवसाय करने के लिए बाध्य किया। तत्पश्चात् श्री संतोष वर्ष 2019–20 में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के संपर्क में आये। व्यवसायिक दुग्ध उत्पादन के विधाओं को विश्वविद्यालय के प्रक्षेत्र पर बारीकी से सीखने के बाद उन्होंने शहरी गाय पालन एवं दुग्ध प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग में अपना कैरियर बनाने का फैसला लिया। इस दौरान बिहार स्टार्ट–अप में डेयरी फार्मिंग की 10 लाख रूपये की परियोजना भी प्राप्त किया। डेयरी–पशुपालन में राज्य में पहले स्टार्ट–अप के रूप में **"आनन्द सागर डेयरी"** की स्वीकृति होने का गौरव श्री संतोष को प्राप्त हुआ।

श्री संतोष कुमार इसका श्रेय विश्वविद्यालय के कुलपति को देते हैं जिनसे प्रेरित होकर उन्होंने डेयरी फार्मिंग करने का फैसला किया। बाद में जब भी श्री कुमार ने अपने डेयरी फार्म पर किसी प्रकार की समस्या बताई, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा समुचित सुझाव देकर उसका समाधान किया गया। इन्होंने भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली में भी 10 दिनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। फिलहाल इनके फार्म में पास 42 साहिवाल गायें हैं तथा आप समीपवर्ती पशुपालकों को साहिवाल गाय पालन का नेटवर्किंग तैयार कर रहें हैं और साथ ही साथ उन्नत गुणवत्ता वाली साहिवाल के लिए बैंक लिंकेज तथा गाय को उपलब्ध कराकर उनके उत्पाद के विक्रय को सरल, सुभम एवं लाभदायक बना रहे हैं। फिलहाल आपके समुह में 110 पशुपालक जुड़ चुके हैं तथा डेयरी को अपना व्यवसाय बना चुके हैं। आप दूध को बोतल में पैक कर पटना शहर में सप्लाई करते हैं। वर्तमान में आपके माध्यम से 225 लीटर दूध की खपत (120–160 रू0 प्रति किलो) पटना में की जाती है। आप पशुओं में साइलेज के प्रयोग को भी बढ़ावा दिये हैं जिससे किसान अपना रहे हैं।

आपके जज्बे व उद्यमिता विकास के कार्यों को विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2019 में सराहना की गई और आपको सम्मानित भी किया गया। आप युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत हैं। वर्तमान में आपकी आमदनी 6–8 लाख प्रति वर्ष है।

# दुबई में इंजिनियरिंग की नौकरी त्यागकर लेयर फार्मर बने श्री अभय कुमार

**नाम :– श्री अभय कुमार**
**उम्र :– 42 वर्ष**
**पता :– ग्राम– हेतीमपुर, गोरेयाकोठी, जिला– सीवान**
**व्यवसाय :– लेयर फार्मिंग**

पेशे से सिविल इंजिनियर श्री विजय कुमार आठ वर्षों तक दुबई में अच्छी खासी नौकरी किये। वतन वापसी की भावना से वर्ष 2014–15 में देश लौटने पर पशु आधारित उद्यम स्थापित करने के विचार से बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना में संपर्क किया। वहीं से प्रेरणा लेकर वर्ष 2016 में 5000 क्षमता के लेयर फार्म से अपना छोटा व्यवसाय की शुरूआत की। कोरोना काल में प्रथम लहर में उन्हें लगभग 20 लाख का नुकसान हुआ, उसके बावजूद भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी तथा दुसरे संक्रमण लहर में उन्हें लगभग 40 लाख का मुनाफा हुआ।

फिलहाल श्री कुमार के पास 10000 क्षमता वाला 6 लेयर शेड हैं जिसे यांत्रीकरण द्वारा संचालित किया जाता है। आप जुझारू एवं मेहनती व्यवसायी के रूप में अपनी छवि स्थापित कर चुके हैं। आप अंडो का थोक व्यवसाय करते हैं तथा छोटे मुर्गीपालकों को भी एक बड़ा बाजार उपलब्ध कराते हैं। सीवान जिले के युवाओं द्वारा 10 लेयर फार्म शुरू करने का श्रेय भी आपको जाता है। आपकी दक्षता एवं समर्पण को देखते हुए बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय ने वर्ष 2021 में आपको सम्मानित कर चुकी है। अंडा उत्पादन के क्षेत्र में राज्य में आपका प्रयास सराहनीय हैं

मुर्गीपालन व्यवसाय को सफलता पूर्वक करने के पश्चात श्री कुमार ने आधुनिक डेयरी पशुपालन का प्रशिक्षण भी बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय से लेकर सफलता पूर्वक साहिवाल गायों का डेयरी फार्म तैयार किया जो आधुनिक सुविधाओं से युक्त है। श्री कुमार से प्रेरणा लेकर अन्य युवा भी इस व्यवसाय को सहर्ष अपना रहे हैं।

# पशुपालन एवं मत्स्यपालन कर इंजी. अमित कर रहे लाखों की कमाई

**नाम – श्री अमित कुमार**
**उम्र – 32 वर्ष**
**पता – फतेहपुर, ढीवरा, फुलवारी, पटना**
**व्यवसाय – बकरी, मुर्गी एवं मत्स्यपालन**

बी0 टेक करने के पश्चात श्री कुमार ने कृषि आधारित व्यवसाय करने का निर्णय लिया उन्होंने सन् 2020 में बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त कर फुलवारीशरीफ से मात्र दस किलोमीटर की दुरी पर बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय के तकनीकि सहयोग से 18 एकड़ भुमि में एवं 20 लाख रूपये की लागत से अपना फार्म स्थापित किया। श्री कुमार के फार्म पर दो एकड़ के तीन तालाब, चार सौ बत्तखे, एक सौ पचास बकरीयॉ एवं चार सौ देशी एवं कड़कनाथ मुर्गीयॉ हैं।

वर्तमान में आप दस युवकों को रोजगार भी दिये हुए हैं। विश्वविद्यालय के तकनीकि सहयोग से वर्ष 2022 में आपके द्वारा युवकों को बकरीपालन, मुर्गीपालन तथा मत्स्यपालन के विषय पर प्रशिक्षण का कार्य भी प्रारंभ किया गया है।

श्री कुमार बताते हैं कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं विधार्थियों का दल नियमित रूप से उनके फार्म का निरिक्षण करता रहता है जिससे बिमारीयों की रोकथाम एवं मृत्युदर पर नियंत्रण हुआ है। श्री कुमार के अनुसार मछली सह बत्तख पालन कर दो एकड़ में अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है, तथा पशु आधारित व्यवसाय के विपणन में कोई परेशानी नहीं होती है। इनके अनुसार दो एकड़ के समेकित फार्म से कई युवा उनके फार्म पर निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर पाच से छह लाख रूपये वार्षिक आय कमा सकते हैं। इन्हें विश्वविद्यालय के द्वारा 2021 में सम्मानित भी किया जा चुका है।

# डेयरी व्यवसाय से मधुरेन्द्र बने स्वावलंबी

| | | |
|---|---|---|
| **नाम** | – | **श्री मधुरेन्द्र कुमार आर्य** |
| **उम्र** | – | **48 वर्ष** |
| **पता** | – | **ग्राम – बादीपुर, पटना** |
| **व्यवसाय** | – | **गौपालन एवं बकरी पालन** |

पटना जिले के बादीपुर के निवासी मधुरेन्द्र रोजगार की तालाश में लगभग दस वर्ष पूर्व बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना पहुँचे तथा वहीं से उनके जीवन में व्यवसायिक मोड़ आया। उन्होंने अपनी पुश्तैनी दो –तीन गायों से अपना रोजगार प्रारंभ किया। विश्वविद्यालय के तकनीकी सलाह एवं हौसला आफजाई से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी मेहनत रंग लाई तथा वर्तमान में उनके फार्म पर कुल 42 पशु हैं। वे अपने फार्म का दुग्ध/दूध समिति समिती को देते हैं । उनकी लगन एवं मेहनत को देखते हुए उन्हें गॉव के सहकारी दुग्ध समिति का सचिव बनाया गया है। उनके संग्रहण क्षेत्र पर प्रति दिन लगभग 450 लिटर दूध का संग्रह होता है। गॉव एवं आस–पास के लोग उनसे प्रेरणा लेकर गाय एवं भैंस पालन के व्यवासाय की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

उनका मानना है कि अगर किसानों को समुचित बाजार सुनिश्चित की व्यवस्था की जाये तो किसान कोई भी उद्यम करने को तैयार हैं। दुग्ध समिति के माध्यम से कई छोटे एवं मझौले पशुपालकों को रोजगारोन्मुख बनाने में आपका विशेष योगदान है। आपके मेहनत, लगन तथा आसपास के पशुपालकों की सजगता के कारण आज बांदीपुर गॉव को विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिया जा चुका है तथा हर प्रकार की तकनिकों का प्रसार पशुपालकों के लिए आपके प्रयास से सुनिश्चित किया जा रहा है।

# ब्रायलर एवं लेयर फार्मिंग को बनाया कमाई का जरिया

**नाम – श्री अजीत कुमार**
**उम्र – 40 वर्ष**
**पता – ग्राम – घटारो, लालगंज, वैशाली**
**व्यवसाय – मुर्गी पालन**

38 वर्षीय अजीत कुमार ने लगभग आठ वर्ष पूर्व मात्र 200 ब्रायलर से अपना छोटा सा रोजगार शुरू किया था। लाभ से उत्साहित होकर उन्होनें बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त किया। तत्पश्चात बड़े पैमाने पर ब्रायलर का कारोबार प्रारंभ किया। श्री कुमार बताते हैं कि उन्होंने कभी नौकरी करने का विचार नहीं किया तथा आज दस लोगों को रोजगार दिये हुए हैं।

उनका कहना है कि प्रक्षेत्र का वैज्ञानिक विधि से अगर प्रबंधन किया जाये तथा आहार को सही तरीके से प्रबंधित किया जाये तो इस व्यवसाय में लाभ ही लाभ है। कोरोना काल में भी इनका फार्म घाटे में नहीं गया जबकि अनेकों लोगों के फार्म बंद हो गये। इसका उन्हें गर्व है और इसका श्रेय बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय के वैज्ञानिकों को देते हैं जिनके व्यवसायिक दूरदर्शिता एवं तकनिकी पहलुओं को अपनाकर वे हमेशा लाभ कमाते रहते हैं। वर्तमान में इनके पास राज्य सरकार द्वारा अनुदानित 10000 अंडा उत्पादन की क्षमता वाला लेयर फार्म भी है। लगभग 60 लाख की लागत पर आज सलाना 8–10 लाख रूपये कमाकर अन्य लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन गये हैं। उन्हें सन् 2018 में विश्वविद्यालय द्वारा सफल पोल्ट्री उद्यमी के रूप में सम्मानित भी किया जा चुका है।

# बकरीपालन को आजीविका के रूप में अपनाकर कायम किया मिसाल

**नाम – श्री मिथिलेश कुमार एवं रौशन कुमार**
**उम्र – 35 एवं 36 वर्ष**
**पता – ईदिलपुर, सोनपुर, सारण, बिहार**
**व्यवसाय – बकरी पालन**

स्वरोजगार की इच्छा से दो युवा मिथिलेश एवं रौशन ने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना से तकनीकि प्रशिक्षण प्राप्त कर सन् 2020 में 40 बकरीयों से अपना एक छोटा सा व्यवसाय पटना से करीब 30 कि0मी0 की दूरी पर सारण जिले के ईदिलपुर ग्राम में शुरू किया।

उनकी मेहनत रंग लाई तथा उसके परिणामस्रूप 2020 में 40 बकरीयों से शुरू किया गया व्यवासाय मात्र तीन वर्षों में 300 बकरीयों का हो गया (लगभग 7 गुणा)। रौशन बताते हैं कि ब्लैक बंगाल प्रजाति की बकरीयॉ ही पालते हैं तथा दिनभर उन्हें चराई पर बगल के जंगलों में रखते हैं। जिससे उनके भोजन पर लागत खर्च का बचत के साथ–साथ स्वास्थ्य लाभ भी बेहतर होता है। वे अपने बकरीयों के रक्त एवं मल की जॉच नियमित रूप से बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना में करवाते हैं तथा टिकाकरण की प्रकिया को सख्ती से पालन करते हैं। उनके फार्म में मृत्यु दर 0.5 प्रतिशत के साथ न्युनतम स्तर पर है।

पिछले वर्ष मिथिलेश कुमार की सलाना कमाई लगभग 7 लाख रूपये हुई थी। अब उनकी योजना अपने फार्म की क्षमता को बढ़ाकर भविष्य में 1000 बकरीयों तक ले जाना है। इनकी उद्यमशिलता को सराहते हुए बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय ने 2023 में इन दोनों युवाओं को सम्मानित भी किया है।

# डॉग ब्रीडिंग से हैचरी मशीन निर्माता तक का सफर कर उद्यमी बने प्रत्युष

**नाम – प्रत्युष कुमार**
**उम्र – 33 वर्ष**
**पता – गर्दनीबाग, रोड न0 15, पटना**
**व्यवसाय – डॉग ब्रिडींग, हैचरी निमार्ण एवं कुक्कुट व्यवसाय**

पशु – पक्षी एवं उन्नत नस्ल के कुत्ते पालने के शौकिन प्रत्युष ने इसे अपने आजिविका का माध्यम बना डाला। डॉग ब्रिडिंग तथा शौकिया मुर्गीपालन में अच्छा मुनाफा कमाने के पश्चात् बटेर पालन का व्यवसाय शुरू किया। उन्होने बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना से बटेर के चुजों को ले जाकर उनसे अंडों एवं चुजा निकालकर बेचने का विचार किया तथा महाविद्यालय के तकनीकि सहयोग से घर पर ही छोटे से देशी हैचर को बना डाला। इसकी लागत मात्र 3000 रूपये आई। चुजा बिक्री में मुनाफा को देखकर वे प्रोत्साहित हुए तथा एक 500 अंडों की क्षमता वाला हैचरी ईकाई का स्वंय निमार्ण किया जिसकी हैचिबिलिटि 80 प्रतिशत से अधिक आई। प्रत्युष कुमार की सफल उद्यमिता को देखते हुए क्षेत्र के अन्य युवा भी काफी उत्साहित होते हैं और बटेर पालन व्यवसाय को अपना रहे हैं।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने निरीक्षण कर कुछ तकनिकी सुधार का सुझाव दिया, परिणामस्वरूप वे आज बटेर पालन से अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं साथ ही 500, 1000 एवं 5000 क्षमता के हैचरी मशीन का निमार्ण कर लोगों को उपलब्ध करा रहे हैं। वे बताते हैं कि पहले अच्छी क्वालिटी की मशीन के लिए हैदराबाद या चेन्नई जाना पड़ता था, परंतु अब हम उसी गुणवत्ता की मशीन कम लागत पर किसानों को उपलब्ध करा रहे हैं। उनकी बनाई मशिनों की मॉग तेजी से बढ़ रही है तथा बंगाल एवं उत्तर प्रदेश की किसान भी खरीदकर ले जा रहे हैं। इनकी उद्यमशिलता को सराहते हुए विश्वविद्यालय द्वारा 2023 में इन्हें नवाचारी उद्यमी के रूप में सम्मानित किया जा चुका है।

# असम की बेटी अजन्ता भुमिज बिहार में डेयरी फार्मिंग से कर रहीं लाखों की कमाई

**नाम – अजन्ता भुमिज**
**उम्र – 26 वर्ष**
**पता – सैदलपुर, फतुहा, जिला– पटना**
**व्यवसाय – गौ–पालन**

कहते हैं कि इच्छा शक्ति अगर द्वढ़ हो तो समस्याएं स्वयं अपना समाधान ढुंढकर आपका मार्ग प्रशस्त करतीं है। कुछ यही हुआ 26 वर्षीय अजंता भुमिज के साथ। उत्तर पूर्वी राज्य असम की बेटी जब बिहार में चार वर्ष पूर्व बहू बनकर आई तब उन्होंनें ठान लिया था कि मैं स्वयं का डेयरी व्यवसाय करूंगी। पारिवारिक मान्यताएं एवं परिवेश इसमें व्यवधान डाल रहे थे। परंतु इन सारी बाधाओं को लांघकर उन्होंने अपनी लगन एवं मेहनत से उस मुकाम को हासिल किया जिसे पाना विपरित परिस्थितियों में एक महिला के लिए मुश्किल होता है। अजन्ता ने बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना से 15 दिनों का आन फार्म प्रशिक्षण लेकर अपना डेयरी व्यवसाय आरंभ किया।

वो आज एक सफल डेयरी व्यवसायी बन चुकी हैं। इनके पास साहिवाल, गिर तथा राठी प्रजाति की गाये है। इनके फार्म पर लगभग 170 लीटर दूध का उत्पादन प्रतिदिन होता है, जिसे पटना शहर में आसानी से बेच लिया जाता है। उनके दूध एवं उत्पाद की मॉग प्रतिदिन बढ़ रही है। श्रीमती अजंता इसका सारा श्रेय अपने पति कुंदन एवं परिवारवालों को देती हैं जिन्होंने इस व्यवसाय में इनका बढ़ चढ़कर समर्थन किया। उनके पति पेशे से ईंजिनियर हैं तथा बाहर नौकरी करते हैं।

वे बताती हैं कि शुरू में मुझे कुछ भाषाई एंव सांस्कृतिक बाधाएं आईं लेकिन मैंने ठान लिया था कि मैं किसी भी परिस्थिति में डेयरी फार्मिंग करूंगी अतः आज मैं अपनी सारी बाधाओं को पार कर यह व्यवसाय कर रही हुं। वे स्वयं राजस्थान एवं हरियाणा जाकर राठी एवं गिर गायों को खरीदकर लायीं। बिहार एवं अन्य राज्यों के पारिस्थितिकी अंतर के कारण गायों को अनुकुल होने में आरंभ में काफी समस्या हुई परंतु अब उनका फार्म सही तरीके से चल रहा है। आप पशुओं को स्वयं निर्मित दाना मिश्रण एवं साइलेज खिलाती है।

वर्तमान में आपके पास 25 गायें तथा 12 बछियॉ हैं एवं आप अपने गाय के दूध को शीशे के बोतल में पैक कर के बाजार में बेचतीं हैं। इतना ही नहीं आप महिला सशक्तिकरण की पक्षधर हैं तथा ग्रामिण महिलाओं को डेयरी व्यवसाय हेतु प्रेरित कर दुग्ध उत्पादन कराती हैं। आपके संपर्क से लगभग 50 महिलाएं गौ दुग्ध उत्पादन कर आपके माध्यम से अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहीं हैं। फिलहाल आपकी वार्षिक आमदनी 5–6 लाख रूपये हैं। आपके जज्बे, लगन एवं महिला समाज के प्रेरणास्रोत के लिए बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना ने आपको सन् 2022 में सम्मानित किया है।

# ब्रायलर फार्मिंग से सशक्त हुए कांटी के श्री विमल कुमार

**नाम – श्री विमल कुमार**
**उम्र – 32 वर्ष**
**पता – ग्राम शाईन कांटी, मुजफ्फरपुर**
**व्यवसाय – मुर्गी पालन**

मुजफ्फरपुर जिले के कांटी प्रखंड के मैसाहॉ गॉव के निवासी बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के NASF परियोजना से जुड़कर मात्र 20 मुर्गीयों से वर्ष 2019 में अपना मुर्गीपालन शुरू किया। उससे प्राप्त अंडो को बेचकर तथा देशी मुर्गे के क्षेत्रीय स्तर पर अधिक मांग ने इन्हें इसे बड़े रूप में करने को प्रोत्साहित किया। परियोजना के माध्यम से उन्होंने चार स्तर का प्रशिक्षण विश्वविद्यालय से प्राप्त किये तथा 50 हजार की लागत से ब्रायलर तथा बटेर फार्म खोलने का फैसला लिया।

वर्तमान में आपके पास 800 मुर्गे का ब्रायलर फार्म तथा 300 रंगीन मुर्गीयों का फार्म है। आप अंडा और मुर्गी बेचकर सलाना 7–8 लाख रूपया कमा रहे हैं। लो इनपुट तकनीक पर आधारित फार्म के कारण आपने कम पूँजी एवं न्युनतम जोखिम में अधिक मुनाफा का मॉडल विश्वविद्यालय के निर्देशन में सफलता पूर्वक तैयार किया एवं अन्य जगहों पर प्रचार किया, जिससे अन्य ग्रामीण भी मुर्गीपालन हेतु उत्साहीत हो रहे हैं। भविष्य में आपकी 5000 ब्रायलर फार्म के निमार्ण की योजना है।

# बटेर एवं मुर्गी पालन के आय से पुरी कर रहे परिवार के पढ़ाई का खर्चा

**नाम – श्री दीपक कुमार**
**उम्र – 20 वर्ष**
**पता – अंजनाकोट, मोतीपुर, मुजफ्फरपुर**
**व्यवसाय – बटेर पालन**

श्री दीपक कुमार को इंटर पास करने के बाद पैसे के अभाव में पढ़ाई बंद करने की नौबत आ गई थी। इसी दौरान 2019 में NASF परियोजना परियोजना जो बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय , पटना के द्वारा संचालित थी, उससे प्रशिक्षण प्राप्त कर बटेर पालन का व्यवयाय शुरू किया। शुरू में लकड़ी का 5′ x 5′ का दरबा बनाकर 40 बटेर से अपना काम शुरू किया।

श्री कुमार बताते हैं कि उन्हें चार सप्ताह में 1800 रूपये का मुनाफा हुआ जिससे वे काफी उत्साहित हुए। उन्हे जीवन में पहली बार 1800 रूपये की कमाई पार्ट टाइम काम से हुई जिससे वे पुनः बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना से बटेर के चूजे खरीदे एवं 200 बटेर पालकर व्यवसाय को आगे बढ़ाया। आमदनी होने पर अपना कॉलेज में दाखिला तो लिए ही साथ ही छोटे दो भाईयों का प्राईवेट स्कुल में दाखिला करवा दिया। श्री कुमार बताते हैं कि मैं अपने पढ़ाई के साथ–साथ बटेर पालन करके अपने भाईयों के पढ़ाई का खर्चा भी निकाल लेता हुँ। इस व्यवासाय के बिना हमारी पढ़ाई छुटने की नौबत आ गई थी। वे अपनी पढ़ाई पूरी कर इस व्यवासाय को करना चाहते हैं। वर्तमान में श्री दीपक बटेर पालन के घरेलु व्यवसाय से 15000–18000 रूपया प्रति माह कमाकर अपने परिवार की शिक्षा पर होने वाले व्यय के अलावे अन्य सहयोग भी करते हैं।

# मुर्गीपालन से कर रहे अच्छी कमाई

**नाम – राजु सिंह**
**उम्र – 28 वर्ष**
**पता – लखनी, चकिया, पुर्वी चम्पारण**
**व्यवसाय – मुर्गीपालन**

राजु सिंह बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय , पटना से प्रशिक्षण प्राप्त कर 2020 में 200 मुर्गीयों से अपना छोटा सा व्यवसाय शुरू किया पहली बार तो उन्हें कोरोना महामारी के कारण घाटा हुआ परतुं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के मनोबल बढ़ाने पर दूसरी बार रंगीन मुर्गी वनराजा को विश्वविद्यालय से लाकर पाला तथा 300 मुर्गी पालने में चार माह में उन्हें लगभग 6000 रूपये का लाभ प्राप्त हुआ। अपनी सफलता पर वे अगला लॉट 500 मुर्गे तथा 500 ब्रायलर का रखा तथा 25000 रूपये का मुनाफा प्राप्त किया।

इसके बाद श्री राजु ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वर्तमान में इनके फार्म पर वनराजा, कड़कनाथ तथा बटेर का पालन होता है। दूर–दूर से लोग इनसे मुर्गी खरीद कर ले जाते हैं। इन्हें प्रतिवर्ष 4–5 लाख रूपये की बचत हो रही है। उनकी योजना 25000 ब्रायलर के फार्म की स्थापना है। जिसके लिए वे फार्म निर्माण भी शुरू कर दिये हैं।

# होटल में सेफ का कार्य छोड़कर मुर्गी व्यवसायी बने विजय कुमार

| | | |
|---|---|---|
| नाम | – | विजय कुमार शर्मा |
| उम्र | – | 48 वर्ष |
| पता | – | मंदिरी, पटना |

राजस्थान के झुनझुनु जिले के रामपुरा ग्राम के निवासी श्री विजय कुमार शर्मा नौकरी की तालाश में पटना आए थे, श्री शर्मा ने होटल मैनेजमेन्ट का कोर्स किया और पटना के कामथ रेस्टोरेंट में सेफ का काम करते थे। लाकडाउन के कारण उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इस दरमयांन उन्होंने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय से संपर्क किया और मुर्गीपालन करने का निणर्य लिया। उन्होंने अपने मंडी ही की छत पर 10' X 10' के क्षेत्रफल से मुर्गी, बटेर, कड़कनाथ को ट्रायल बेसिस पर शुरू किया। उसके अंडे से चूजा निकालकर बेचे तथा व्यापार बढ़ा तो फुलवारी के गौनपूरा में सानाली का लेयर फार्म शुरू किया । वर्तमान में उनके पास 3000 मुर्गीयॉ हैं तथा देशी अंडा का व्यवसाय करने तथा सोनाली का चूजा Supply करने का प्रस्ताव है। अंडे के व्यवसाय से उन्हें प्रतिमाह 40000–50000 रूपये की आमदनी होती है।

इनका उद्देश्य भविष्य में किसानों को सस्ते दर पर चूजा उपलब्ध कराना है। प्राप्त मुनाफे से उन्होंने एक चार पहिया वाहन भी खरीदा है जिससे किसानों को दाना, दवाई तथा उन्य महत्वपूर्ण सामग्री पहुँचाते हैं। भविष्य में समेकित कृषि के तहत मुर्गी सह मछली पालन 6 कट्ठे की तालाब में करने की योजना है।

## मुर्गीपालन से अच्छी आमदनी कर रहे मनीष

**नाम – मनीष निषाद**
**उम्र – 35 वर्ष**
**पता – बगाही, परैया, गया**
**व्यवसाय – समेकित मुर्गीपालन**

वर्ष 2017 में मात्र 200 वनराजा मुर्गी से मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू कर आज आप अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। श्री मनीष ने एक बीघे के बगीचे में छोटा सा तालाब निर्मित कर हंस और बत्तख पालन भी कर रहे हैं। बत्तख के अंडों एवं मॉस को बेचकर आप लगभग 10,000 रूपये प्रतिमाह अर्जित करते हैं। आपने इस व्यवसाय में मुनाफा को देखते हुए 1000 मुर्गीयों का मुर्गी फार्म का निर्माण किया है और वर्तमान में 500 वनराजा का पालन अर्ध–चराई विधि से कर रहे हैं। आप 2021 में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना में व्यवसायिक प्रशिक्षण लेकर समेकित मुर्गीपालन से वर्तमान में लगभग 5 लाख रूपये की वार्षिक आमदनी प्राप्त कर रहे है। श्री मनीष की सफलता से प्रेरित होकर अगल–बगल के 15 युवा भी देशी मुर्गी पालन करना शुरू किये हैं। श्री मनीष वनराजा मुर्गी के साथ–साथ 400 कड़कनाथ, सोनाली तथा 500 बटेर का पालन भी कर रहे है। श्री मनीष ने अपने फार्म के सामने एक रेस्त्रां भी बनया है जिसमें अपने फार्म का ताजा बटेर एवं मुर्गे का उत्पाद लोगों को उचित दाम पर उपलब्ध कराते है। उनके रेस्त्रां में अब दूर–दराज से लोग आने लगे है। अच्छी कमाई को देखते हुए आप गया शहर में भी एक रेस्त्रां खोलने की योजना बना रहे हैं। श्री मनीष विश्वविद्यालय के तकनीकी सहायता से अपने उत्पाद का ब्रांडिंग कराने की प्रक्रिया भी कर रहे है

आप अपने सफलता का श्रेय बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना को देते हैं।

# पर्यावरणीय नियंत्रित ब्रायलर फार्मिंग से उद्यमी बने श्री संतोष

**नाम – संतोष सिंह**
**उम्र – 48 वर्ष**
**पता – ताजुविगहा, नांलदा, बिहार**
**व्यवसाय – ब्रायलर फर्मिंग**

महज 500 ब्रायलर से लगभग आठ वर्ष पहले मुर्गी पालन शुरू करने वाले श्री संतोष ने कभी ये नहीं सोंचा था कि इतने कम समय में उनके पास पचास हजार ब्रायलर का E.C. फार्म हो जायेगा। श्री संतोष जी ने 2003 में बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय से कुक्कुट पालन में प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं छोटे स्तर पर ब्रायलर फार्मिंग प्रारंभ किया। ब्रायलर फार्मिंग करते समय आने वाली समस्याओं के निदान हेतु हमेशा महाविद्यालय के वैज्ञानिकों से परामर्श लेकर काम किया एवं ब्रायलर फार्मिंग में लाभ कमाते रहे। उन्होंने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की प्रेरणा से केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर बरेली में ब्रायलर फार्मिंग विषय पर उच्चस्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। 2019 में कमाए हुए लाभ से पूंजी बचाकर एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के दिशानिर्देशन में 20,000 क्षमता के अर्ध पर्यावरणीय नियंत्रित ब्रायलर फार्मिंग को आरम्भ किया। श्री सिंह कहते हैं की प्रारंभिक लागत ज्यादा होने से शुरू के कुछ वर्षों में कम लाभ होता था किन्तु बाद के वर्षो में प्रतिवर्ष यह लाभ बढ़ता चला गया। वर्तमान में श्री सिंह के अनुसार वे प्रतिवर्ष रु. 40 लाख का शुद्ध लाभ कमा रहे हैं। वर्ष प्रति वर्ष मिलाने वाले लाभ से उत्साहित होकर उन्होंने ब्रायलर फार्म की क्षमता को बढ़ाकर 50000 कर दिया है। वर्तमान में उन्होंने 90000 ब्रायलर फार्मिंग की क्षमता वाले पूर्ण स्वचालित पर्यावरणीय नियंत्रित ब्रायलर फार्म शुरू कर दिया है एवं भविष्य में इसे और बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। श्री सिंह कहते हैं की उनकी सफलता से उत्साहित होकर उनके गाँव के कई युवा ब्रायलर फार्मिंग के व्यवसाय को अपनाना चाहते हैं। अपनी इस सफलता के लिए विश्वविद्यालय से मिले सहयोग के लिए श्री सिंह हमेशा आभारी रहेंगे एवं विश्वविद्यालय को भी ऐसे उद्यमी पर गर्व है।

# बटेर एवं मुर्गी पालकर व्यवसायी बने जितेन्द्र

**नाम – जितेन्द्र कुमार सिंह**
**उम्र – 40 वर्ष**
**पता – बरूणा, बिहियाँ, भोजपुर, आरा**

वर्ष 2015–16 में बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना से महज 200 वनराजा एंव ग्रामप्रिया प्रजाति के मुर्गीयों से अपना छोटा सा व्यवसाय शुरू करने वाले जितेन्द्र ने ये नहीं सोचा था कि इतने कम समय में उनकी आमदनी लगभग 10 लाख रूपये प्रतिवर्ष हो जायेगी। स्नातक पास जितेन्द्र बताते हैं कि कोरोना काल के बाद इस व्यवासाय में और इजाफा हुआ है। इस व्यवसाय में फायदा को देखते हुए वे बटेर एवं बत्तख पालन भी शुरू कर चुके हैं तथा पाँच हजार अंडों की क्षमता वाला दो हैचरी भी स्थापित किये हैं। आप चुजा निकालकर अगल–बगल के किसानों को पालने के लिए देते हैं तथा बिक्रय योग्य होने पर उन्हें सुनिश्चित बाजार भी उपलब्ध करवाते हैं।

श्री जितेन्द्र के साथ इस व्यवासाय से लगभग 250 छोटे किसान, ग्रामिण युवा एवं महिलाएँ मुर्गी एवं बटेर पालन हेतु प्रेरित हुए हैं तथा अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। आप अपने इलाके में मुर्गी पालन के लिए युवाओं को लगातार प्रशिक्षित एंव प्रेरित करते हैं। श्री जितेन्द्र पिछले वर्ष 2 एसी वैन खरीदे हैं तथा अपने बटेर को लखनउ, बनारस, गाजीपुर, गोरखपुर एवं गौहाटी के बाजारों में सीधे भेजते हैं।

श्री जितेन्द्र अपने सफलता का श्रेय बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को देते हैं। भविष्य में श्री जितेन्द्र पटना एवं अन्य बड़े शहरों में अपने उत्पाद बिक्री का आउटलेट खोलने की योजना बना रहे हैं जिससे गुणवत्तायुक्त उत्पाद उपभोक्ताओं को उपलब्ध करा सकें।

# डेयरी फार्मिंग कर सफल व्यवसायी बने रंजन

**नाम :- श्री रमेश रंजन**
**उम्र :- 38 वर्ष**
**पता :- तिलकनगर, दानापुर, पटना**
**व्यवसाय :- डेयरी फार्मिंग**

महज पाँच गायों से एक छोटा व्यवसाय शुरू कर अपनी मेहनत एवं लगन से श्री रंजन के पास जर्सी एवं फ्रीजियन प्रजाति की उन्नत गायें हैं। वे अपनी गायों का दूध मशीन से निकालते हैं। पिछले वर्ष आपने एक दूध पैकेजिंग मशीन भी लगाया है तथा अब आप अपने फार्म के दूध को पैक करके बाजार में बेचते हैं एवं अच्छा मुनाफा कमाते हैं। श्री रंजन बताते हैं की डेयरी व्यवसाय में अपार संभावनाएं हैं तथा इसके बाजार में कोई समस्या नहीं है। अगर पशुओं का प्रबंधन, पोषण एवं स्वास्थ्य रक्षा सही तरीके से किया जाये तो इस व्यवसाय में मुनाफा होना निश्चित है। श्री कुमार के अनुसार पशुओं को हरा चारा सुनिश्चित करने से बाँझपन की समस्या नहीं होती है। वे अपनी सफलता का श्रेय बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को देते हैं जिनके तकनीकि मार्गदर्शन से ही आज वे इस मुकाम पर पहुंचे हैं वे कहते हैं की विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त कर मेरा पशुपालन के प्रति नजरिया ही बदल गया और आज मैंने न केवल खुद का सफल डेरी व्यवसाय स्थापित कर लिया है बल्कि अन्य युवाओं को भी इस व्यवसाय को करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा हूँ।

# पोल्ट्री मीट प्रोसेसिंग से बने आत्मनिर्भर

**नाम :- ओमकार सिंह**
**उम्र :- 25 वर्ष**
**पता :- शेखपुरा, बिहार**
**व्यवसाय :- पोल्ट्री मीट प्रोसेसिंग एवं डेलीवरी**

मेकेनिकल इंजीनियरिंग से बी टेक करने के उपरांत श्री ओमकार जी ने 2021 में प्राइवेट सेक्टर में नौकरी ज्वाइन किया किन्तु इन्हें नौकरी करना पसंद नहीं आया और इन्होने पशु उत्पाद प्रसंस्करण के क्षेत्र में उद्यमी बनने का विचार कियझं उन्होंने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के वैज्ञानिको से पशु उत्पाद प्रसंस्करण के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग के लिए संपर्क किया। तत्पश्चात विश्वविद्लय से मिले सहयोग से पोल्ट्री प्रोसेसिंग, कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग, तथा उत्पादों को उपभोक्ता के घर तक पहुचने के लिए "चिकेनवाला" नाम से स्टार्टअप शुरू किया। इस स्टार्टअप को आगे बढ़ाने के लिए इनको इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रद्योगिकी मंत्रालय द्वारा रु. चार लाख का अनुदान प्राप्त हुआ। बाद में स्टार्टअप बिहार सीड फण्ड स्कीम के माध्यम से भी रु. 10 लाख एवं स्टार्टअप इंडिया सीड फण्ड स्कीम के द्वारा रु 25 लाख के अनुदान हेतु इनका चयन किया गया है। वर्तमान में आप पटना एवं आसपास के क्षेत्रों में मुर्गी मांस प्रसंस्करण के लिए मूल्य श्रृंखला के निर्माण कर अपने उद्यम को सफल बना रहे हैं तथा न केवल क्षेत्र के मुर्गी पलकों को आर्थिक एवं तकनिकी रूप से सशक्त बना रहे हैं बल्कि खुद भी लगभग रु. छः रू लाख सालाना का लाभ अर्जित कर रहे हैं। आपकी इस सफलता को देखकर आसपास के कई किसान इसी तरह से मुर्गी पालन करते हुए मांस प्रसंस्करण के क्षेत्र में उद्यमिता विकास करना चाहते हैं। आपकी योजना मीट प्रोसेसिंग प्लांट की स्थापना के द्वारा राज्य में गुणवत्तापूर्ण मुर्गी एवं बटेर मांस को सुगमतापूर्वक उपभोक्ताओं तक पहुँचाना है। सफलता के सफर में आप विश्वविद्यालय से मिलने वाले सहयोग के प्रति आभारी महसूस करते हैं तथा विश्वविद्यालय परिवार भी इनसे जुड़कर गौरवान्वित महसूस करता है।

## शिक्षण कार्य के साथ कुक्कुट व्यवसाय कर बने युवाओं के प्रेरणा श्रोत

**नाम :- श्री दीलीप कुमार**
**उम्र :- 54 वर्ष**
**पता :- ग्राम- मझौल, जिला- बेगुसराय,**
**व्यवसाय : - देशी मुर्गी पालन**

पेशे से शिक्षक श्री दीलीप कुमार जी एक वर्ष पहले शौकिया तौर पे महज 50 वनराजा मुर्गी से अपना कार्य शुरू किये पशु प्रेमी श्री कुमार बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के संपर्क में आकर इसे न सिर्फ अपने लिए एक सहायक रोजगार के रूप मे अपनाया बल्की अपने विद्यार्थियों को प्रेरित कर इसे वैकयार्ड फार्मिंग के रूप में करवाया जिससे युवा स्वावलंवी बन अपना खर्चा स्वंय निकाल सकें।

वर्तमान में श्री कुमार 800 वनराजा एवं सोनाली मुर्गी का फार्म स्थापित कर 20,000 रूपया अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे है। वे लगभग 50 युवाओं कों मुर्गीपालन करवा रहे हैं। वे शिक्षण के साथ उन्हें मुर्गीपालन का प्रशिक्षण एवं प्रेरणा भी देते है।

# सफलता की कहानियाँ

प्रकाशकः
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय
बिहार, पटना – 800014

Diksha Art & Prints
+91-9431436534
ISO: 19001:2015